...ISHNA
...AHAR ...
Dept. of Economics,
SRAP College, Barachakia

M.V.V.I

MEANING AND MEASUREMENT OF ECONOMIC GROWTH.

1. 8us.

वर्तमान 20वीं सदी की गणना हम आर्थिक विकास के युग में करते हैं क्योंकि इस शताब्दी के प्रारम्भिक काल से ही विकसित तथा अर्द्धविकसित दोनों प्रकार के राष्ट्रों के सम्मुख आर्थिक विकास की समस्या काफी महत्त्वपूर्ण बन गई है। आर्थिक विकास के इस बढ़ते हुए महत्त्व के कारण इसके क्षेत्र में अनेक प्रकार की समस्याएँ एवं विवादग्रस्त विषय उत्पन्न हो गये हैं। फलतः अर्थशास्त्रियों का ध्यान इन समस्याओं की ओर गया। वाणिकवादियों, एडम स्मिथ, Marx तथा Keynes के पहले एवं बाद के नवीन अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक विकास को परिभाषित करने का प्रयास किया। किन्तु उस समय अर्थशास्त्रियों की रुचि मुख्यतः यूरोपीय देशों के आर्थिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक ढाँचे से सम्बन्धित आर्थिक समस्याओं से था। भारत जैसे अल्पविकसित देशों की ओर अर्थशास्त्रियों का ध्यान द्वितीय महायुद्ध के बाद गया।

G-2

यह ध्रुव सत्य माना गया है कि—

"Poverty any where is a threat to prosperity every where." इसलिए Meir and Boldwin ने कहा है कि — "A study at the Poverty at nations has been more urgency than a study at the wealth at nations."

किसी भी शास्त्र या विज्ञान की परिभाषा ठोस रूप में तभी प्रस्तुत की जा सकती है जबकि उस शास्त्र या विज्ञान की शाखा पूर्णतः विकसित हो। विकास का अर्थशास्त्र अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था से गुजर रहा है अतः ऐसी स्थिति में अगर अर्थशास्त्रियों में आर्थिक विकास की परिभाषाओं को लेकर मतभेद है तो उसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इस सम्बन्ध में Mrs. Barbara Wooten ने ठीक ही कहा है — "When these gathered six economists, there are seven opinions."

चूँकि आर्थिक विकास कई आर्थिक एवं अनार्थिक तत्वों पर निर्भर करती है। अतः इसे स्पष्ट रूप से परिभाषित करना कठिन है। वैसे आर्थिक विकास का शाब्दिक अर्थ — अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में उत्पादकता के स्तर को बढ़ाना है। विस्तृत अर्थ में आर्थिक विकास से अभिप्राय राष्ट्रीय आय में वृद्धि करके निर्धनता को दूर करना तथा सामान्य जीवन-स्तर में सुधार लाना है।

आर्थिक विकास के परिभाषा के सम्बन्ध में कई दृष्टिकोण दिखलाई पड़ते हैं। कुछ अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक विकास का अर्थ वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि से लिया है। जबकि कुछ अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक विकास का सम्बन्ध प्रतिव्यक्ति राष्ट्रीय आय की वृद्धि से स्थापित किया है। इसके अलावा कुछ विद्वानों का मत है कि आर्थिक विकास का सम्बन्ध वास्तविक जीवन-स्तर तथा आर्थिक कल्याण में वृद्धि से है। अतः विचारों में भिन्नता के कारण आर्थिक विकास को कुछ शब्दों के माध्यम से स्पष्ट करना सरल नहीं है। इन वाद-विवादों के बावजूद भी आर्थिक विकास की कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषायें निम्नलिखित हैं।

Meir and Baldwin के अनुसार, — "Economic development is a process whereby an economist real national income increases over a long period of time."

Prof. Williamson and Buttrick के अनुसार, —

"Economic development or growth refers to the process, whereby, the people of the country or region come to utilise the resources available to bring out a sustained increase in Per Capita Production of goods and services."

Clain Clark के अनुसार, "The process of economic growth involves ascending capital requirements per unit of product up to a certain point, from there on descending capital requirements."

Bazan के अनुसार,— "Let economic growth or development be defined as an income outline in per capita output of material goods."

Youngson के अनुसार, — "Economic progress in an increase of the power to achieve economic aims of the community concerned."

लेविस के अनुसार — 'आर्थिक विकास का अर्थ, प्रतिव्यक्ति उत्पादन में वृद्धि से लगाया जाता है।"

इन परिभाषाओं से अर्थशास्त्र की तीन महत्वपूर्ण विशेषताएँ दिखलाई पड़ती है—

(a) Economic Growth is a Continuous Process:→

इसका अभिप्राय अर्थव्यवस्था के विभिन्न अंगों में परिवर्तन लाने से है। एक बार जब आर्थिक विकास की गति प्रारम्भ हो जाती है तो वह एक Continuous process के रूप में स्वयं आगे की ओर चलती रहती है। इस अनवरत प्रक्रिया का सामान्य परिणाम यह होता है कि इससे राष्ट्रीय आय में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहती है।

next

Seven opinions:"

(b) Economic Growth relates to the increase in real income :→

किसी देश के अन्दर एक निश्चित अवधि के अन्तर्गत वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन की कुल मात्रा में से मशीनों की घिसावट, पुनर्स्थापन व्यय इत्यादि को निकाल देने पर हमें शुद्ध वास्तविक राष्ट्रीय आय की मात्रा उपलब्ध होती है। इस प्रकार, किसी देश का आर्थिक विकास तभी माना जाएगा जब उस देश में वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन निरन्तर बढ़ता है,

(C) Economic Development is a long-term Process:→ आर्थिक विकास कि परिभाषाओं में एक महत्त्वपूर्ण तत्व यह है कि शुद्ध राष्ट्रीय आय में निरन्तर वृद्धि होती रहती है तथा आर्थिक विकास का सम्बन्ध अल्पकाल से न होकर दीर्घकाल से होता है। इसलिए अगर अर्थव्यवस्था में किन्हीं अस्थायी कारणों यथा; अच्छी फसल, अप्रत्याशित निर्यात, cyclical fluctuations आदि से देश की राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। उसका सम्बन्ध आर्थिक विकास से नहीं है। अतः स्पष्ट है कि आर्थिक विकास का अर्थ शुद्ध राष्ट्रीय आय की दीर्घकालीन वृद्धि से है।

अतः आर्थिक विकास को स्पष्ट रूप में इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है — "आर्थिक विकास एक सतत प्रक्रिया है जिसमें एक निश्चित अवधि में देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती जाती है।

कभी-कभी अर्थशास्त्र के अन्तर्गत Economic Development, Economic Progress तथा Economic Growth का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जाता है। परन्तु इन शब्दों के बीच सूक्ष्म अन्तर की एक रेखा स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है।

Mrs. U. K. Hicks ने Economic Develop[illegible] lined [illegible] ...rises...

तथा Economic Progress के बीच विकास की पृष्ठभूमि में भेद किया है। इनके दृष्टिकोण में Economic Development का सम्बन्ध अर्द्धविकसित राष्ट्रों से है जबकि Economic Progress का प्रयोग इन्होंने विकसित राष्ट्रों की प्रगति के रूप में किया है।

Prof. Schumpeter ने भी इसी तरह का भेद Economic Development तथा Economic Growth के बीच अपनी पुस्तक Theory of Economic Development के अन्तर्गत किया है। इनके विचार में Economic Growth का सिद्धान्त यह बतलाता है कि आर्थिक जीवन प्रत्येक वर्ष उन्हीं धाराओं से बढ़ता हुआ चलता है जिस प्रकार किसी प्राणी में रक्त का संचालन अनवरत रूप से होता है। अर्थात Economic Growth के अन्तर्गत हम नवीन सृजन की बात नहीं करते हैं परन्तु Economic Development से केवल यही आशय नहीं निकलता है कि आर्थिक विकास एक गति से आगे की ओर चलता रहे। Development का अर्थ यह होता है कि सर्वदा अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत नई उत्पादन प्रणालियों का प्रयोग कर नई वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन किया जा सके। Prof. Kindle Berger के अनुसार आर्थिक वृद्धि का अर्थ केवल उत्पादन वृद्धि से है जबकि आर्थिक विकास का अर्थ है। उत्पादन वृद्धि + प्राविधिक एवं संस्थागत परिवर्तन।

इस प्रकार आर्थिक विकास बहुत व्यापक शब्द है इसका सम्बन्ध किसी देश के आर्थिक जीवन में वृद्धि तथा गतिशीलता लाने से है परन्तु Economic Growth इससे भी अधिक व्यापक शब्द है जिसमें Economic Progress तथा Economic Development दोनों ही सम्मिलित किए जा सकते हैं।

seven opinions:"

वास्तव: Economic Development, Economic Growth तथा Economic Progress के बीच इतना सूक्ष्म अन्तर है कि उसे पूर्ण रूप में स्पष्ट नहीं किया जा सकता। Prof. Lewis ने अपनी पुस्तक "Theory of Economic Growth" के अन्तर्गत Economic Progress तथा Economic Growth को पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयोग किया है। अगर वे इन दोनों शब्दों में Economic Growth को अधिक उपयुक्त मानते हैं। Prof. Lewis ने कहा भी है कि — "हम अक्सर केवल वृद्धि (Growth) का परन्तु कभी-कभी विविधता के लिए प्रगति (Progress) या विकास (Development) का उल्लेख करेंगे।"

वर्तमान युग में आर्थिक विकास एक चर्चित विषय है। प्रत्येक राष्ट्र विकास की इस दौड़ में एक-दूसरे से आगे निकलने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है परन्तु कोई राष्ट्र प्रगति या विकास कर रहा है या नहीं इसका पता कैसे लगाया जाये।

इस सम्बन्ध में अर्थशास्त्रियों के कई विचार मिलते हैं। एक ओर जहाँ Meir and Bolwin, Meade, Youngson तथा Simon Kuznets किसी देश के आर्थिक विकास का माप वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि के आधार पर करते हैं वहीं दूसरी ओर Jacob Viner, Bazan, Prof. Lewis ने प्रति व्यक्ति के वास्तविक आय की वृद्धि के आधार पर आर्थिक विकास का माप किया है। जो अर्थशास्त्री वास्तविक राष्ट्रीय आय की वृद्धि के आधार पर आर्थिक विकास का माप करना चाहते हैं वे प्रति व्यक्ति आय के मापदण्ड को भ्रामक मानते हैं क्योंकि ——

(a) प्रतिव्यक्ति आय, राष्ट्रीय आय पर निर्भर करती है।
(b) यदि किसी देश की राष्ट्रीय आय में वृद्धि के साथ-साथ उसकी जनसंख्या में वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि न होने पाये। ऐसी स्थिति में यह मान लेना गलत होगा कि उस देश का विकास नहीं हुआ है।

जो अर्थशास्त्री प्रतिव्यक्ति आय की वृद्धि के आधार पर आर्थिक विकास का माप करना चाहते हैं वे इसके पक्ष में निम्न तर्क दिये हैं —

(a) राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने पर समाज में आय का वितरण असमान ढंग से हो रहा है तो वाह्य दृष्टि से भले ही इसे आर्थिक माना जाए लेकिन वास्तव में यह आर्थिक विकास नहीं विषमताओं का विकास माना जाएगा।
(b) चूँकि आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य अविकसित राष्ट्र के लोगों की जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना है, जीवन-स्तर में तबतक वृद्धि नहीं हो सकती जबकि प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि न हो।

Okun तथा Richardson ने जीवन-स्तर तथा उपभोग स्तर को आर्थिक विकास के माप का आधार माना है। यह मापदण्ड भी दोषमुक्त नहीं है क्योंकि उपभोग स्तर तथा जीवन स्तर अत्यन्त भ्रामक शब्द है जिनका निरपेक्ष माप सम्भव नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन से प्रमुख प्रश्न उठता है कि आर्थिक विकास का उपर्युक्त मापदण्ड क्या है? आज भी यह समस्या अपने आप में विवाद का विषय बना हुआ है।

मगर विकास के मापदण्ड के रूप में मुख्य विवाद राष्ट्रीय आय एवं प्रतिव्यक्ति आय के बीच है। चूंकि इन दोनों मापदण्डों के अपने-अपने दोष हैं इसलिए सभी प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं के लिए किसी एक ही मापदण्ड का चुनाव करना न तो सम्भव ही है और न ही उचित। विकसित देशों के आर्थिक विकास का मापदण्ड राष्ट्रीय आय में वृद्धि तथा पिछड़े देशों के आर्थिक विकास का मापदण्ड प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को मानना उचित प्रतीत होता है। वास्तव में अधिकांश अर्थशास्त्री प्रतिव्यक्ति आय मापदण्ड का अधिक समर्थन करते हैं।